



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shrimad Bhagavad Gita Chapter-3 Shloka-19 | श्रीमद्
भगवद्गीता अध्याय तीन-श्लोक उन्नीस | PDF

अध्याय 3 – कर्म योग
श्लोक 19

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुषः ॥19॥

सरल हिंदी में भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—

इसलिए मनुष्य को आसक्ति रहित होकर अपने कर्तव्य कर्मों का निरंतर पालन करना चाहिए, क्योंकि बिना आसक्ति के कर्म करने वाला व्यक्ति परम लक्ष्य अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति कर लेता है।

विस्तृत व्याख्या

निष्काम कर्म का उपदेश

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण कर्मयोग के मूल सिद्धांत को स्पष्ट करते हैं।



वे अर्जुन को बताते हैं कि मनुष्य को अपने कर्तव्यों का पालन अवश्य करना चाहिए, लेकिन कर्मों के फल के प्रति आसक्ति नहीं रखनी चाहिए।

जब कर्म केवल कर्तव्य समझकर और ईश्वरार्पण भाव से किए जाते हैं, तब वे आध्यात्मिक उन्नति का साधन बन जाते हैं।

आसक्ति रहित कर्म का महत्व

भगवान “असक्तः” शब्द का प्रयोग करते हैं, जिसका अर्थ है— आसक्ति से मुक्त।

अधिकांश लोग कर्म इसलिए करते हैं क्योंकि वे उसके फल की इच्छा रखते हैं। सफलता मिलने पर प्रसन्न होते हैं और असफलता मिलने पर दुःखी हो जाते हैं।

लेकिन कर्मयोगी अपने कर्तव्य का पालन पूरी निष्ठा से करता है, जबकि उसका मन फल की चिंता से मुक्त रहता है।

कर्तव्य पालन की आवश्यकता

श्रीकृष्ण कहते हैं कि मनुष्य को अपने “कार्य कर्म” अर्थात् निर्धारित कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति के कुछ उत्तरदायित्व होते हैं। परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना धर्म का एक महत्वपूर्ण भाग है।



कर्तव्य से भागना आध्यात्मिकता नहीं है; बल्कि सही भावना से कर्तव्य निभाना ही सच्चा धर्म है।

कर्मयोग से परम लक्ष्य की प्राप्ति

भगवान बताते हैं कि जो व्यक्ति बिना आसक्ति के कर्म करता है, वह “परम” अर्थात् सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त करता है।

निष्काम कर्म मन को शुद्ध करता है, अहंकार को कम करता है और व्यक्ति को आत्मज्ञान की ओर अग्रसर करता है।

धीरे-धीरे ऐसा साधक परमात्मा की प्राप्ति और मोक्ष के योग्य बन जाता है।

कर्म और आध्यात्मिक उन्नति का संबंध

बहुत से लोग सोचते हैं कि आध्यात्मिक जीवन का अर्थ कर्मों का त्याग करना है, लेकिन श्रीकृष्ण इसके विपरीत शिक्षा देते हैं।

वे बताते हैं कि कर्म स्वयं बंधन का कारण नहीं हैं। बंधन का कारण कर्मों के फल के प्रति आसक्ति है।

जब कर्म निस्वार्थ भाव से किए जाते हैं, तब वही कर्म मुक्ति का मार्ग बन जाते हैं।

कर्मयोग की व्यावहारिक शिक्षा

यह श्लोक दैनिक जीवन में भी अत्यंत उपयोगी है।



मनुष्य को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए, लेकिन परिणाम को ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। इससे मानसिक तनाव कम होता है और मन में शांति बनी रहती है।

ऐसा दृष्टिकोण व्यक्ति को सफलता और असफलता दोनों में संतुलित बनाए रखता है।

मुख्य बिंदु

- मनुष्य को अपने कर्तव्य कर्मों का पालन करना चाहिए।
- कर्म करते समय फल की आसक्ति नहीं रखनी चाहिए।
- निष्काम कर्म मन को शुद्ध करता है।
- कर्तव्य से भागना आध्यात्मिकता नहीं है।
- आसक्ति ही कर्मबंधन का मुख्य कारण है।
- कर्मयोग आत्मज्ञान और मोक्ष की ओर ले जाता है।
- निस्वार्थ कर्म परमात्मा की प्राप्ति का साधन बनते हैं।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक कर्मयोग के सार को प्रस्तुत करता है। भगवान् श्रीकृष्ण बताते हैं कि जीवन का उद्देश्य कर्मों से भागना नहीं, बल्कि उन्हें सही दृष्टिकोण से करना है।



जब व्यक्ति अपने सभी कर्मों को ईश्वर को समर्पित करके करता है और फल की इच्छा छोड़ देता है, तब उसका मन शुद्ध होने लगता है। ऐसी शुद्धता उसे आत्मज्ञान और अंततः परमात्मा की प्राप्ति की ओर ले जाती है।

इस प्रकार निष्काम कर्म केवल सामाजिक कर्तव्य नहीं, बल्कि आध्यात्मिक मुक्ति का भी मार्ग है।

पदों का भावार्थ

तस्मात् – इसलिए

असक्तः – आसक्ति रहित

सततम् – निरंतर

कार्य – कर्तव्य

कर्म – कर्म

समाचर – भली-भांति करो

असक्तः – आसक्ति रहित

हि – क्योंकि

आचरन् – करते हुए

कर्म – कर्म

परम् – परम लक्ष्य, परमात्मा

आप्नोति – प्राप्त करता है

पुरुषः – मनुष्य

श्लोक का संदेश

भगवान् श्रीकृष्ण सिखाते हैं कि मनुष्य को अपने कर्तव्यों का पालन निष्ठा और समर्पण के साथ करना चाहिए, लेकिन कर्मों के फल के प्रति आसक्ति नहीं रखनी चाहिए।



निष्काम भाव से किए गए कर्म मन को शुद्ध करते हैं और व्यक्ति को आत्मज्ञान, परम शांति तथा अंततः परमात्मा की प्राप्ति तक पहुंचाते हैं।

RELATED ARTICLE



Chapter-3 Shalok-17



Chapter-3 Shalok-18



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

